संपादकीय

जल सुरक्षा का द्वितीय अंक आपके कर कमलों में देते हुए मुझे अतीव हर्ष की अनुभूति हो रही है। प्रथम अंक अर्थात प्रवेशांक को आप सभी ने जितना प्यार और सम्मान दिया और जितनी सराहना की है; उस हेतु आप सभी का साधुवाद। आप के विचारों को पत्रिका के अगले अंक में सम्मिलित करने का हमारा पूरा प्रयास रहेगा। जल हम सभी की मूलभूत आवश्यकता तो है ही; परंतु मात्र जल कह देने से ही काम नहीं चलने वाला है। निर्धारित मात्रा, गुणवत्ता और यथासमय आवश्यकता की पूर्ति के भाव इस **'जल सुरक्षा'** शब्द में पूर्णतया निहित हैं। जिस प्रकार हमारे देश के जनसंख्या वृद्धि हो रही है उससे प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता में लगातार कमी आती जा रही है। जल की गुणवत्ता भी लगातार घटती जा रही है। आज लगभग जल के सभी स्रोत किसी न किसी प्रकार से समस्या ग्रसित हैं। जल की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले तमाम कारण हैं जिनको विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं है। जल प्रदूषण की भयंकर एवं विकराल होती जा रही समस्या सर्वविदित ही है।

हमारे देश में कई पारंपरिक जल प्रणालियाँ हैं जो पारिस्थितिक तंत्र को समृद्ध बनाए रखती हैं और बढ़ती मानव जनसंख्याको भोजन देती हैं, तनावग्रस्त हो गई हैं। नदियाँ, झीलें और जलभृत सूख रहे हैं या उपयोग के लिए बहुत अधिक प्रदूषित हो रहे हैं। विश्व की आधे से अधिक आर्द्रभूमियाँ लुप्त हो चुकी हैं। कृषि किसी भी अन्य स्रोत की तुलना में अधिक जल का उपयोग करती है और उसमें से अधिकांश को अक्षमताओं के कारण नष्ट कर देती है। जलवायु परिवर्तन दुनिया भर में मौसम और जल के पैटर्न को बदल रहा है, जिससे कुछ क्षेत्रों में कमी और सूखा पड़ रहा है और कुछ क्षेत्रों में बाढ़ आ रही है। वर्तमान उपयोग दर पर तो यह स्थिति और भी बुरी होगी। 2025 तक दुनिया की दो-तिहाई जनसंख्याको जल की कमी का सामना करना पड़ सकता है। और दुनिया भर के पारिस्थितिकी तंत्र को और भी अधिक हानि होने की संभावना होगी।

संयुक्त राष्ट्र विशेषज्ञों का अनुमान है कि वैश्विक औसत तापमान में प्रत्येक 1°C (1.8°F) की वृद्धि के लिए, नवीकरणीय जल संसाधनों में 20 प्रतिशत की गिरावट होगी। ग्लोबल वार्मिंग से जल-तनावग्रस्त क्षेत्रों की संख्या बढ़ने और पहले से ही प्रभावित क्षेत्रों में जल-तनाव बढ़ने की आशंका है। ऑस्ट्रेलिया, दक्षिणी संयुक्त राज्य अमेरिका और उत्तरी अफ़्रीकी देशों जैसे उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में अधिक बार और लंबे समय तक सूखा पड़ने और गर्मी बढ़ने की आशंका है; हालाँकि, जब इन क्षेत्रों में वर्षा होती है, तो इसके अधिक तीव्र होने का अनुमान लगाया जाता है। जलवायु वैज्ञानिकों का कहना है कि उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में मौसम भी अधिक परिवर्तनशील हो जाएगा।

निर्बाध शहरीकरण, शहरी लोगों का मलमूत्र विसर्जन और शहरी निकायों तथा कारखानों द्वारा उत्सर्जित प्रदूषित जल को बिना शोधित किए हुये सीधे नदी-नालों में गिरा देने के कारण आज भारत देश की हर नदी प्रदूषित है। वह भी तब, जब भारतीय संस्कृति और परंपरा के अनुसार पर हम नदियों

को माता कहते हैं और पूजा करते हैं। हमारे देश में आज भी विशेष पर्वों पर नदी स्नान की परंपरा है और इसी वर्ष प्रयागराज में महाकुंभ भी लग रहा है, जिसमें करोड़ों लोगों के स्नान करने की संभावना है। विषम परिस्थिति तो यह है कि हम सभी जल को प्रयोग करते हैं, चाहते हैं की जितना आवश्यकता हो हम को उतना जल हर समय प्राप्त होता रहे और उसकी गुणवत्ता भी उत्तम रहे।

यदि हमारा अभीष्ट यही है तो हाथ पर हाथ धर कर बैठने से काम चलने वाला नहीं है। हम में से प्रत्येक व्यक्ति को कुछ न कुछ उपाय तो करना ही पड़ेगा। जल मांग में कमी अर्थात जल प्रयोग में कमी और जल उपयोग दक्षता में वृद्धि करने के साथ साथ हमें जल को प्रदूषित होने से बचाने के और जल को शोधित करने की महती आवश्यकता है और इसके साथ साथ जल स्रोतों के संवर्धन एवं संरक्षण की आवश्यकता, जिसमें की गुणवत्ता और मात्रात्मकता दोनों ही शामिल हैं, विशेष रूप से आवश्यकता है। इसके लिए विशिष्ट कार्य योजना बना करके युद्धस्तर पर कार्य करने की गहन आवश्यकता प्रतीत होती हैं।

मेरा विश्वास है कि आप सभी इस विषय पर गहनता से विचार करके अपने अपने स्तर पर कुछ ऐसे कार्य को करने का प्रयास करेंगे जिससे की समवेत रूप से हमारे जल संसाधन सुरक्षित और अप्रदूषित अर्थात प्रदूषण मुक्त बने रहें जिससे कि युग युगांतर तक मानवता की सेवा होती रहे वरना आने वाली पीढ़ियाँ हमें कभी क्षमा नहीं करेंगी।

आप सभी के सुखद भविष्य की मंगल कामनाओं के साथ,

आपका

(अनिल कुमार मिश्र)

नई दिल्ली -12
मार्गशीष त्रयोदशी, 2024